

विषय-वस्तु

पुरोवाक्

iii-iv

प्रस्तावना

v-vi

राष्ट्रीय आन्दोलन और संस्कृत

१-४२

१. संस्कृत साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम

३-८

२. संस्कृत की प्रेरक भूमिका

९-१६

३. राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना

१७-२१

४. स्वदेश के प्रति निष्ठा

२२-२६

५. राष्ट्रीय एकता का मूलाधार : संस्कृत भाषा

२७-३५

६. प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक मूल्य

३६-४२

साहित्य के उत्कृष्ट प्रतिमान

४३-८६

७. चरित्र के उच्चतम आदर्श रघु

४५-४९

८. संस्कृत नाटकों में विलक्षण रामकथा योजनाएं

५०-५६

९. शौर्य और प्रविधि-ज्ञान के प्रतीक : अर्जुन

५७-६४

१०. कालिदास के क्रान्तिकारी आयाम

६५-६९

११. कालिदास समीक्षा का इतिहास

७०-७८

१२. संस्कृत में उत्कृष्ट ऋतु वर्णन : वसन्त

७९-८५

प्रगतिशील और नवोन्मेषी दृष्टिकोण

८७-१२८

१३. वेद कालीन उन्नत समाज
 १४. प्राचीन वाङ्मय में आधुनिक अवधारणाओं के उत्स
 १५. संस्कृत जीवित भाषा या जनभाषा रही है?
 १६. संस्कृत में नव्यगीतियाँ
 १७. संस्कृत काव्यों में युग-धारा की छाप
 १८. संस्कृत छन्दः परिवार का विकास

८९-९४
 ९५-९९
 १००-१०७
 १०८-११६
 ११७-१२१
 १२२-१२८

वाङ्मय का व्यापक फलक

१२९-१६८

१९. अनात्मवादी दर्शन परम्परा : चार्वाक दर्शन
 २०. वैज्ञानिक संस्कृत वाङ्मय
 २१. धातुविज्ञान
 २२. वरेण्य काव्यों के संस्कृतानुवाद : विहारी
 २३. संस्कृत साहित्यकार महिलाएँ
 २४. संस्कृत की शब्द यात्रा : जीव शब्द का इतिहास
 २५. पंचतत्त्व की विवेचना : जलतत्त्व

१३१-१३५
 १३६-१४१
 १४२-१४६
 १४७-१५१
 १५२-१५९
 १६०-१६४
 १६५-१६८

भारतीय भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव

१६९-२१८

२६. संस्कृत भाषा की विशिष्टता
 २७. संस्कृत और भारतीय वर्णसमाम्नाय
 २८. भारतीय भाषाओं के काव्य पर संस्कृत का प्रभाव
 २९. तुलसी के मानस पर संस्कृत का प्रभाव
 ३०. संस्कृत साहित्य का व्रजभाषा साहित्य पर प्रभाव

१७१-१७५
 १७६-१८१
 १८२-१८८
 १८९-२१२
 २१३-२१७

सतत् प्रवर्तमान शास्त्रलेखन

२१९-२५२

३१. लोक और शास्त्र : भारतीय अभिगम
 ३२. शास्त्रलेखन की सततगामी धारा
 ३३. भारतीय वर्णक्रम-शास्त्र
 ३४. कलाओं के शास्त्र
 ३५. संस्कृत और कम्प्यूटर : भविष्य की दिशाएँ

२२१-२२७
 २२८-२३४
 २३५-२३७
 २३८-२४७
 २४८-२५२